अरविन्द केजरीवाल, एक समीक्षा

2009 के चुनावो के ठीक बाद ज्ञान तत्व 178 सोलह से तीस जून 2009 में अपनो से अपनी बात के अंतर्गत यह स्पष्ट किया था कि भारतीय राजनोति के बुरे दिन समाप्त हो रहे हैं और सुशासन के लक्षण दिख रहे हैं। उसके बाद के तीन वर्षो में मैनें कई बार इस धारणा को मजबूत किया और अब मेरी ये धारणा और मजबूत हो रही है। मेरे विचार में भारतीय राजनीति में चार लोग प्रधानमंत्री पद की दौड मे दिख रहे हैं। पांचवे व्यक्ति राहुल गांधो थे। भारत के लोक तंत्र के लिये राहुल गांधी का प्रधान मंत्री की दौड में शामिल होना सबसे ज्यादा खतरनाक था। मैने ज्ञान तत्व 252 में इस खतरे की ओर ध्यान भी दिलाया था। सौभाग्य से टीम केजरीवाल द्वारा राबर्ट वाड्रा के खिलाफ रहस्य उदघाटन ने राहुल गांधी के खतरो को पूरी तरह टाल दिया है। अब तो पधान मंत्री की दौड मे चार ही लोग बचे हैं। 1. मनमोहन सिंह 2 नीतिश कुमार 3 अरविन्द केजरीवाल 4 नरेन्द्र मोदी। राहुल गांधी का इस दौड से बाहर हो जाना एक सुखद संयोग है।

मैनें 2009 से ही मनमोहन सिंह में आशा की एक किरण मानी है। बीच मे सोनिया गांधी ने पुत्र मोह में मनमोहन सिंह को अस्थिर करने की कोशिश की जिसमे स्वार्थी विपक्षियों ने भी उनका साथ दिया। लेकिन किसी तरह लडखडाते लडखडाते मनमोहन सिंह बचे रह गये। और अब तो सोनियां गांधी के पास भी वैसी नैतिक छवि नही बची कि वे राहुल गांधी को आगे लान का खतरा मोल ले।

मैने पिछले छ महिनो में मार्च 2012 से ही लगातार लिखना शुरू कर दिया था कि प्रधान मंत्री के रूप में अरविन्द केजरीवाल संभावित व्यक्तित्व है। मुझे लगातार अरविन्द केजरीवाल में प्रधान मंत्री बनने योग्य सर्वाधिक योग्यता दिखती रही है। तीन माह पहले ज्ञान तत्व 252 में लेख लिखकर स्पष्ट भी किया था। उसके बाद अन्ना हजारे और अरविन्द केजरीवाल में दूरियां बढ़ गई है। फिर भी मेरा मानना है कि अरविन्द केजरीवाल प्रधान मंत्री को दौड में शामिल होने योग्य व्यक्तित्व है। प्रधान मंत्री होने के लिये व्यक्ति को योग्य भी होना चाहियें और विश्वसनीय भी । योग्यता और विश्वसनीयता मिलकर ही सुशासन का मार्ग खोल सकते है। किन्तु सुशासन की जगह स्वशासन एक अच्छा विकल्प है जो अब तक दूर की बात दिखती है। यदि हम मनमोहन सिंह की समीक्षा करे तो वे नीयत के मामले में भी परीक्षा दे चुके ह और योग्यता के मामले में भी। नीतिश कुमार भी जिस प्रकार विहार को खडा कर सके वह उनकी योग्यता और नीयत प्रमाणित करने के लिये पर्याप्त है। नरेन्द्र मोदी में योग्यता औरो से ज्यादा है। जिस प्रकार इंदिरा गांधी ने सिक्खो की संगठनिक ताकत को तोडा भले हो उसके दुष्परिणाम भी उसे भोगने पडे। उसी प्रकार नरेन्द्र मोदी ने मुसलमानो की साम्प्रदायिक ताकत को तोडा यद्यपि उसके लिये नरेन्द्र मोदी को भी बहुत सी परेशानियां उठानी पडी। सच बात है कि साम्प्रदायिकता को चुनौती देना कोई आसान काम नही होता है। इस खतरे को उठाने के कारण ही आज मोदी प्रधान मंत्री पद दौड तक शामिल हो गये है। अन्यथा इमानदारी के मामले मे तो मोदी से भी आगे और बहुत लोग हैं। जहां तक अरविन्द केजरीवाल का प्रश्न है तो अरविन्द केजरीवाल में क्षमता अन्य तीनो उम्मीदवारो से ज्यादा है । मैने स्वयं उनके साथ रहकर देखा है। नीयत के बारे मे अभी तक वे उस प्रकार टेस्टेड नही है जिस प्रकार मनमोहन सिंह नीतिश कुमार और नरेन्द्र मोदी । स्वशासन की दिशा के विषय मे जब तक अन्ना हजारे साथ थे तब तक कोई चिन्ता की बात नही थी किन्तु अब लाइन अलग अलग होने के बाद यह स्पष्ट नही है कि अरविन्द केजरीवाल सत्ता प्राप्त होने के बाद सुशासन की दिशा में जाएगे या स्वशासन की दिशा मे। मोदी के बारे में तो यह स्पष्ट है कि संघ परिवार और भारतीय जनता पार्टी के वे पक्के सिपाही हैं जिसके शब्दकोष मे स्वशासन शब्द शामिल ही नही है। इस तरह मादी की राह सुशासन की स्पष्ट है। मनमोहन सिंह और नीतिश कुमार की राह सुशासन और स्वशासन के बीच की है। अरविन्द केजरीवाल द्वारा अन्ना से अलग होने के बाद यह नही कहा जा सकता कि वे स्वशासन की राह पर जाएगे या सुशासन की राह पर। आज से दो महिने पहले अरविन्द केजरीवाल ने वर्तमान संसद और संसदीय प्रणाली पर आक्रमण किया था। ऐसा लगा था कि वे धीरे धीरे स्वशासन को संघर्ष का मुद्दा बनाएगे। किन्तु शीघ्र ही उन्होने राह बदलकर मंत्रीमंडल पर आक्रमण कर दिया जो सुशासन की उनकी इच्छा को मजबूत करता है। उन्होने जितनी तेजो से मनमोहन सिंह पर आक्रमण किया था उससे बचना बहुत कठिन था। लेकिन मनमोहन सिंह उस पूरे आक्रमण से और भी अधिक मजबूत होकर वाहर निकल आये। अब सोनियां गांधी और गडकरी पर जो आक्रमण हुआ है, उससे ये दोनो बच नहीं सकते। खासकर सोनियां गांधी के लिये तो राहुल राग छोडना ही एक मात्र मार्ग है। फिर भी अन्ना हजारे के दूर होने के बाद अरविन्द केजरीवाल के विषय मे आश्वस्त नही हुआ जा सकता कि वे सुशासन के लिये स्वशासन को माध्यम बना रहे है या स्वशासन के लिये सुशासन को । जब भी लोक संसद की चर्चा होती है तो अरविन्द केजरीवाल तत्काल ही उसे टाल देते हैं। दूसरी ओर संविधान संशोधन ग्राम सभा सशक्तिकरण राइट टू रिकाल को अपने मुद्दे में जोडकर रखते है जबकि लोक संसद आंदोलन मे यही सब बाते शामिल है।

भारत की अर्थ व्यवस्था पर गरीबो, ग्रामीणो, श्रमजीवियो, छोटे किसानो के विरूद्व अमीरो, शहरियों, बुद्विजीवियों बडे किसानो का वर्चस्व है। बुद्विजीवियो के नेतृत्व मे ये चारो लोग मिलकर ऐसी अर्थनीति बनाते है कि अन्य चारो का लगातार शोषण होता रहा। गरीबो, ग्रामीणो, श्रमजीवियो, छोटे किसाानो से टैक्स वसूलकर कृत्रिम उर्जा को सस्ता रखना या शिक्षा स्वास्थ पर खर्च करना इन चारो का षड़यंत्र है। मैं मानता हूँ कि दिल्ली मे विजली का आंदोलन न चाहते हुए भी दिल्ली की सत्ता में जाने का एक मार्ग है क्योकि दिल्ली प्रदेश की सत्ता दिल्ली वालो को संतुष्ट कर के ही ली जा सकती ह। यदि बिजली आंदोलन सत्ता प्राप्ति का एक माध्यम है, वास्तव मे टीम अरविन्द का विचार नही, तब तो कोई हर्ज नही है किन्तु यदि टीम अरविन्द का विचार है जिसमे साइकिल पर टैक्स लगाकर रसोई गैस पर सब्सीडी का समर्थन है तो अरविन्द केजरीवाल की सुशासन की इच्छा पर तो विश्वास किया जा सकता है किन्तु स्वशासन की नीयत पर नही। लोग पूछते है कि सरकार यदि डीजल पेट्रोल विजली गैस जैसी वस्तुओ पर मूल्य वृद्धि करे तो हम विरोध करे या नही। मेरे विचार से हमे सरकार के ऐसे कार्यो का विरोध करना चाहिये । क्योकि सरकार इन चीजो पर टैक्स बढाकर रोटी, कपडा, मकान, दवा जैसी वस्तुओ पर कोई राहत नही दे रही है। बल्कि खैरात वाटने मे कम पडते धन की पूर्ति के लिये टैक्स बढा रही है । यदि सरकार एक बार ऐसा कदम उठावे कि डीजल, पेट्रोल आदि का मूल्य 25 प्रतिशत बढाकर वह सारा धन गरीबी रेखा से नीचे वालो मे बराबर बराबर बांट दिया जाएगा तो सरकार को जनता का भरपूर समर्थन मिलेगा। लेकिन कोई सरकार ऐसा नही कर सकती क्योकि वह मध्यम वर्ग के समर्थन पर टिकी हुई है, निम्न वर्ग की उसे कोई परवाह नही है। सरकार कैसे कैस नाटक कर रही है। मेरे विचार से अरविन्द केजरीवाल के अन्ना हजारे से अलग होने के बाद अभी और देखे जाने की आवश्यकता है। फिर भी उनमे प्रधानमंत्री बनने के वे सारे गुण मौजुद है जो दौड मे शामिल अन्य तीन लोगो मे है। धीरे धीरे आगे स्थितिया और स्पष्ट होगी फिर भी इतना स्पष्ट है कि दो हजार नौ के बाद लगातार देश ठीक दिशा मे जा रहा है। प्रधान मंत्री चाहे अरविन्द केजरीवाल बने या नीतिश कुमार । प्रधान मंत्री चाहे मनमोहन सिंह बने । स्थितियां सुधरती जाएंगी । लोक तंत्र कुशासन से सुशासन की ओर बढेगा । और यदि कोई उपाय नही हुआ तो नरेन्द्र मोदी तो अंतिम समाधान है ही। फिर भी अभी उम्मीद है कि वैसी स्थिति नही आयेगी।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 नरेन्द्र सिंह बनबोई बुलंद शहर उत्तर प्रदेश

जिन लोगो की क्रय शक्ति, मुद्रा स्फीति की तुलना मे कम से कम समान रूप से या उससे अधिक नही बढ पाती है ऐसे लोग समाज में व्याप्त आर्थिक असंतुलन को महगांई के रूप मे स्वीकार करते है। आप समाज मे महगांई के अस्तित्व को नकारते है। लेकिन इस पहेली को कभी नही

सुलझाते कि जब तक श्रम मूल्य, मुद्रा स्फीति की तुलना मे समान रूप से नही बढेगा तब तक प्रभावित व्यक्ति उसे महगांई न मानकर आर्थिक असंतुलन के रूप मे किस प्रकार स्वीकार कर सकता है? आपके अनुसार वस्तु की कोमत मुद्रा अवमूल्यन के कारण बढती हुई प्रतीत होती है, लेकिन व्यक्ति की कम क्रय ' शक्ति और वस्तु की ज्यादा कोमत के अंतर को महगांई के रूप मे स्वीकार करने वाला समाज भला महगांई के अस्तित्व को कैसे नकार सकता है! यह स्थिति समाज के एक–तिहाई उच्च आय वर्ग को छोडकर बाकी सम्पूर्ण समाज की है। देश मे आर्थिक असमानता का उन्मूलन भी तब तक महगांई का उपचार सिद्ध नही होगा जब तक व्यक्ति की क्रय ' शक्ति एंव वस्तु के मूल्य मे संतुलन नही होगा। क्या आप आर्थिक असमानता के निराकरण को व्यक्ति को दैनिक आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए पूंजी उत्पादन के कारक के रूप मे स्वीकार करते है? मेरे विचार से आर्थिक असमानता का उन्मूलन समाज मे आर्थिक असमानता के कारण से उत्पन्न हुए वर्ग विद्वेष के उन्मूलन का प्रकार हो सकता हैं! क्योकि इससे पूंजी का केन्द्रीयकरण रूकेगा। लेकिन महगांई का उन्मूलन तो श्रमकर्ता की आय और वस्तु के मूल्य मे संतुलन के अभाव मे नही हो सकता । क्योकि आप आर्थिक असमानता का उन्मूलन करके भी बाजार की स्थिति पर नियत्रण नही कर सकते है? क्या देश की सीमाओ मे किया गया आर्थिक असमानता का उन्मूलन, अन्तरराष्टोय व्यापारिक स्थिति को भी बदल देगा? कृप्या वस्तु स्थिति के सम्पूर्ण परिपेक्ष्य को दृष्टिगत करते हुए अपनी अर्थनीति स्पष्ट करे।

1. कृत्रिम उर्जा की मूल्य वृद्धि से श्रम मूल्य कुछ बढेगा । यह तथ्य ठीक प्रतीत होता है। लेकिन परिवर्तन के इस प्रयोग से यदि कृत्रिम उर्जा की बिक्री उस स्तर तक घट जाती है कि हम कृत्रिम उर्जा की बिक्री पर लगने वाले टैक्स से प्राप्त धन से लोगो को जीवन सुरक्षा पेंशन तथा सुरक्षा खर्चो जैसे महत्वपूर्ण कार्य नही कर पाते है तो तब क्या हम वापिस मौजुदा कर प्रणाली पर लौटेगे? विषय को स्पष्ट करने की कृपा करे।

उत्तर –पूरे भारत मे ऐसा कोई समूह नही है जिनकी स्वतंत्रता के बाद क्रय शक्ति न बढी हो। तैतीस प्रतिशत श्रमजीवो माने जाते है। तैतीस प्रतिशत बुद्धिजीवो और तैतीस प्रतिशत सम्पन्न। तैतीस प्रतिशत जो श्रमजीवो है उनकी क्रय शक्ति स्वतंत्रता क बाद लगभग दो गुनी बढी है जिसे यदि मुद्रा स्फीति से जोड दिया जाए तो लगभग डेढ सौ गुनी हो जाती है। बुद्धिजीवियो की क्रय शक्ति आठ गुनी मानी जाती है। जो मुद्रा स्फीति के साथ जोडने पर 600 गुनी बढो मानी जाती है। सम्पन्नो की क्रय शक्ति 64 गुनी बढी है जो मुद्रा स्फोति के हिसाब से 5000 गुना मानी जाती है। भीख मागने वाले भी स्वतंत्रता के बाद दो गुनी क्रय शक्ति मे जी रहे है। आप कोई ऐसा समूह बताइये जिस समूह की क्रय शक्ति कम से कम दो गुनी न बढें। पुराने जमाने मे आप किसी मजदूर को एक दिन की मजदूरी के रूप मे जितना अनाज देते थे आज कम से कम उसका पांच गुना अधिक दे रहे है। मै यह नही समझा कि आपके कहने अनुसार श्रम और अनाज मे से क्या मंहगा हुआ और क्या सस्ता। श्रम मूल्य मुद्रा स्फोति को तुलना मे लगतार बढ रहा है जब श्रम मूल्य लगातार बढ रहा है और उपभोक्ता वस्तुओ का मूल्य मुद्रा स्फोति कि तुलना मे लगातार घट रहा है तो महंगाई का हल्ला क्यो? आम तौर पर सोना चांदो जमीन क दाम बढ रहे है। कृत्रिम उर्जा खाद्य तेल दाल आदि के लगभग स्थिर है। बाकी सारी वस्तुओ के मूल्य मुद्रा स्फोति की तुलना मे या तो वे घट रहे है या बहुत घटे ह। असत्य प्रचार कभी सत्य नही होते । उसके लिये तो आंकडे बताने पडेंगे। व्यक्ति को क्रय शक्ति की अपेक्षा हर वस्तु को कोमत जब कम हो रही है तो महंगाई का हल्ला क्यो? आपने जो लिखा है कि उच्च वर्ग को छोडकर शेष सबकी क्रय शक्ति घट रही है। वह बात मेरी समझ म असत्य होगी। अन्यथा असत्य को स्वोकार करना होगा। आर्थिक असमानता पर नियंत्रण निम्न, मध्यम, और उच्च वर्ग के बीच क्रय शक्ति के अंतर को कम करने स ही संभव है। तेतीश प्रतिशत श्रम प्रधान लोगो की क्रय शक्ति दो प्रतिशत या अधिक तेज गति से बढे और सम्पन्नो की कम तेज गति स बढे तभी आर्थिक असमानता को रोका जा सकता है। भारत की आर्थिक असमानता का उन्मूलन दूनियां के आर्थिक असमानता के प्रभाव को तोड डालेगा ही। आपका प्रश्न है कि यदि कृत्रिम उर्जा की बिक्री घट जाने से कोई टैक्स कम प्राप्त होगा और हम जीवन भत्ता या सुरक्षा पेंशन नही दे पांएगे। तो मेरे विचार मे यह वहुत अच्छी बात होगी । जीवन भत्ता तो दवा के रूप मे है स्वास्थ वर्धक टानिक नही है। ज्यो ज्यो हमारी आर्थिक स्थिति सधरती जाएगी। त्यो त्यो ये पेंशन और जीवन भत्ते बंद किये जा सकते है । कृत्रिम उर्जा की खपत घट जायेगी। यह बात वर्तमान मे चिंताजनक नही है। पहले कृत्रिम उर्जा की खपत का कम होने दोजिये जब समस्या आएगी तब हल निकल जायेगा। यदि आवश्यकता हुई तो पुनः कृत्रिम उर्जा के प्रोत्साहन के विकल्प हमारे पास खुले हुए ह। पश्चिम के देशो मे श्रम मूल्य बहुत ज्यादा हो जाने के कारण कृत्रिम उर्जा के मूल्य रोकने पडे। भारत मे श्रम मूल्य बहुत कम होने के कारण कृत्रिम उर्जा के मूल्य बढाने की आवश्यकता है। बुद्धिजीवियो ने श्रम शोषण के लिये सस्ती कृत्रिम उर्जा का एक हथियार बनाया है । इस हथियार के प्रभाव को रोकना आवश्यक है।

प्रश्न 2 रचना दबलिश, मेरठ उत्तर प्रदेश

जब भी कोई हिन्दू नेता किसी मुस्लिम सम्प्रदाय के त्योहारो, या ईद मिलन समारोह या पारिवारिक उत्सवो मे सम्मिलित होता है तो वह अपने सिर पर मुस्लिम टोपी पहनकर क्या दर्शाना चाहता है? कि क्या उसने इस्लाम कबूल कर लिया है या वह इस्लाम समर्थक है? अगर मुस्लिम टोपी हिन्दू नेताओ को इतनी अच्छी लगती है तो फिर रोजाना ही पहने , केवल मुसलमानो को प्रसन्न करने के लिये एक दिन ही क्यो? मुसलमानो को भी हिन्दू नेताओ की इस ओछी हरकत का विरोध करना चाहिये। अपने सगे भाइयो को तो हिन्दू गाली देत ह, एक इंच जमीन हथियाने पर हत्या कर देते है लेकिन जब वोट या व्यापार की बात आती है तो मुस्लिम पुरूषो के नाम के आगे भाई ऐसे प्रयोग करते है जैसे राम लक्ष्मण के अवतार हो गये हो? मुसलमानो को उनका हक दिलाने के लिये हिन्दू नेताओ म ऐसी होड सी मचो हुई है कि बस जैसे हिन्दू नेताओ के लिये देश मे इससे ज्यादा और कोई जरूरी काम है ही नही। यु. पी. के मुख्यमंत्रो को भी केवल मुस्लिम कन्याएं ही गरीब दिखाई दी जो उनको तीस हजार रूपया मुफ्त मे दिया जा रहा है। क्या हिन्दू कन्या का विवाह कराना उनके नैतिक दायित्व मे नही आता? सरकारी खजाने के सार्वजनिक जनहित प्रयोग पर सबसे पहले हक उसका है जिसने कोई न कोई टैक्स अदा किया हुआ हो। जिस वग या साम्प्रदाय या धर्म के लोगों ने ज्यादा टैक्स अदा किया हो उसी अनुपात मे सरकारी धन का उपयोग होना चाहिये । लेकिन सरकारी खजाने को कोई भी नेता अपना कैसे कह सकता है।

यदि आप मिनिस्ट्री ऑफ माइनोरिटी अफेयर्स के वेबसाइट पर जा कर देखे तो आप को पता लगेगा की कैसे मुसलमानों के हित के लिये अरबो रूपये सरकारी कोष से खर्च किये जा रहे है। कहने को तो यह सब सुविधाएं सभी अल्पसंख्यक धमावलम्बियो के लिये है पर अधिकतर लाभ मुसलमाना को ही मिलता है। प्रश्न यह है कि हिन्दुओ ने ऐसा क्या पाप किया है कि उनके द्वारा दिया गया टैक्स अल्पसंख्यको के आर्थिक रूप से पिछडे लोगों की उन्नति के लिय खर्च हो और हिन्दू निर्धन इससे पूर्णतया वंचित कर दिये जाएं। सच्चर कमिटी ने एक नितांत झूठी रिर्पोट बना कर कह दिया कि मुसलमान भारत के सबसे पिछडे वर्गो मे है। तथ्य यह है कि मुसलमान मानव विकास के परिचायक मानको मे अधिकतर मे हिन्दुओ से आगे है और केवल पारिवारिक आय तथा साक्षरता मे हिन्दुओ से थोडे से पीछे है। सभी तथ्यो को नकारते सच्चर ने मुसलमानो को सबसे पिछडा वर्ग घोषित कर दिया। सरकार ने अपने संविधान विरोधी कार्य पर पर्दा डालने के लिये जो सुविधाएं मुसलमानों को दी जाने वाली थो उन्हे सभी अल्पसंख्यको के लिये मान्य कर दिया। मुसलमानो के अतिरिक्त जो और अल्पसंख्यक धर्मावलम्बी है वे हर प्रकार से हिन्दुओ से कहीं आगे है। संविधान मे सब को समानता न्याय और धार्मिक भेदभाव न किये जाने की गारंटी दी गई है पर सरकार ने मुस्लिम तुष्टिकरण के आगे संविधान की धज्जियां उडा देने मे कोई संकोच नही किया। उसके बाद मुसलमानों के हित मे लिये जाने वाले कार्यो मे कुछ लोगो को सरकारी कोष से वेतन देना शुरू" कर दिया। अत्यन्त शोक का विषय है, हिन्दू समाज मे इस पर कोई प्रतिक्रिया नही हुई और जो नवीन रूप मे जजिया लग रहा है उस पर कोई आपत्ति नही उठाई गई । ऐसा लगता है कि हम फिर से मुगल कालीन युग मे जी रहे है और हमारे सभी नेता भाजपा ,विहिप, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, बाबा रामदेव, अन्ना हजारे और सब धर्माचार्यो आदि को केवल हिन्दुओ को उनके धर्म के कारण अन्याय सहने पर विवश होने मे कोई बुराई नजर नही आती।

उत्तर– आपने हिन्दू और मुसलमान को व्याख्या करते समय लिखा है कि हिन्दू अपने सगे भाइयो को गाली देते है, एक इंच जमीन हाथ से जाने पर हत्या कर देते है, लेकिन मुसलमान के नाम के आगे भाई शब्द का प्रयोग करते है । मै नही समझा कि हिन्दूओ के अंदर यह बोमारी अन्य धर्मावलम्बियों से ज्यादा हुइ है। दुनियां मे जिस तरह मुसलमान आपस म कट मर रहे है उस तरह हिन्दू नही। इसलिये आम तौर पर हिन्दुत्व को तुलना इस्लाम से करना ठीक नही है। हिन्दू तो मुसलमानो के मस्जिद मे नमाज पढते समय सिर पर मुस्लिम टोपी लगा कर या गुरूद्वारे मे सिक्खो की टोपी पहनकर भी जाने मे कोई संकोच नही करता। जब कि मुसलमान या सिक्ख हिन्दू मंदिरो मे ऐसे संकोच कर भी सकते ह। आपने इस्लाम को तारोफ को और हिन्दुत्व की आलोचना। मै यह नही समझा कि आपका उद्देश्य क्या हो सकता है । मुसलमान हिन्दू को गाय समझता है और अपने को बाघ । मै यह चाहता हूँ कि बाघ को गाय के समान अहिंसक बनाउ। आप चाहते ह कि गाय भी बाघ के समान हिंसक हो जाए । अब तक सारी दुनियां मे बाबरी बिचार धारा के प्रोत्साहन के दुष्परिणाम दिख रहे है। हिसा के क्रम मे आम लोगो का विश्वास बढ रहा है। यह खतरनाक प्रवृत्ति है। हम भी मतलब हिन्दू भी चोटी वाले मुसलमान बन जाए इसकी अपेक्षा यदि मुसलमान भो नमाज पढने वाला हिन्दू बन जाए तो ज्यादा अच्छा हैं। आप जिस कार्य मे लगे है वह न हिन्दुत्व के लिये अच्छा है न मानवता के लिये। मेरी थाली मे सिक्ख मांस खा लिये इसलिए उनकी थालो में मै उससे भी अधिक खराब चीज खाउंगा। ऐसे तर्क हिन्दुत्व की मूल अवधारणा के विरूद्ध है। सारे भारत मे यह प्रमाणित हो चुका है कि मुसलमानो की आर्थिक स्थिति लगातार कमजोर हो रही है। उनम शिकायत का भाव ज्यादा है। व समाज की अपेक्षा धर्म का ज्यादा महत्व देते हैं, संख्या बल बढान पर ज्यादा विश्वास करते है। परिणाम होता है कि उनकी आर्थिक स्थिति खराब होती जाती है। उन्हे इस प्रवृत्ति से समझाकर उबारने की जरूरत है न कि अनावश्यक टकराव मोल लेने की । आपके लेखन से ऐसा महसूस हुआ कि आप इस्लाम के प्रतिस्पर्धी के रूप मे खडे होना चाहते है । मै इसमे कोई अच्छा मार्ग नही समझता। हिन्दुत्व और इस्लाम को तुलना नही हो सकती। क्योकि हिन्दुत्व एक धर्म है और इस्लाम एक सम्प्रदाय । जो लोग हिन्दुत्व को छोडकर साम्प्रदायिकता को राह पर चल रहे है उन्हे सम्प्रदायो के बीच मे टकराने दोजिये। यदि आप भी वैसे किसी साम्प्रदायिक संगठन से जुड हो ता अलग बात है। अपने को हिन्दू कहकर हिन्दत्व को गलत राह मत दिखाइये। हिन्दुत्व धर्म है धर्म को सम्प्रदाय से कोई खतरा नही है। अभी अन्य काल के लिये खतरा इसलिये दिख रहा है कि हिन्दुत्व का भी एक वर्ग साम्प्रदायिक होने लगा है। स्पष्ट दिखता है कि धूर्त और अपराधी समाज को हिन्दू मुसलमान के बीच मे बांट कर रखने मे ज्यादा सक्रिय रहते है। जब सम्पूर्ण समाज की शराफत खतरे मे है तो हिन्दू मुसलमान का मामला बाद मे निपटेगा पहले शराफत की सुरक्षा कर ले। इसलिये ऐसी बातो को अभी कुछ समय के लिये रोक देना उचित हो जाएगा।

प्रश्न 3 आचार्य पंकज राष्ट्रीय अध्यक्ष व्यवस्था परिवर्तन मंच

रामानुजगंज मे 14 दिनो के कार्यक्रम मे आपसे मिलकर प्रत्यक्ष चर्चा करने का अवसर मिला। आपने साम्प्रदायिकता पर विस्तृत विचार रखे तथा धर्म और सम्प्रदाय को अलग अलग परिभाषित किया। मै आपसे यह जानना चाहता हूँ कि किसी भी वर्ग द्वारा साम्प्रदायिकता फैलाना समाज विरोधी कार्य माना जाए या नही ।साम्प्रदायिकता फैलाना सामाजिक असामाजिक या समाज विरोधी कार्यो मे से किस श्रेणी मे मानना चाहिये।

उत्तर – सिर्फ पांच ही प्रकार के कार्य समाज विरोधी होते है। अन्य कार्य या तो सामाजिक होते है या असामाजिक । समाज विरोधी कार्य म 1 चोरी, डकैती लूट, 2 बलात्कार 3 मिलावट , कमतौल 4 जालसाजी, धोखाधडी 5 हिंसा, आतंक, लडाई , झगडा मारपीट शामिल होते है। समाज व्यक्तियो अथवा परिवारो का समूह होता है। समाज मे कोई वर्ग नही हाता । यदि कोई व्यक्ति किसी वर्ग में अपने को शामिल मानता है तो वह असामाजिक हो सकता है। और यदि वह अपने उस असामाजिक कार्य को पूरा करने के लिये पांच प्रकार के साधनो का सहारा लेता है तो वह असमाजिक कार्य के साथ समाज विरोधी कार्य भी हो जाता है किन्तु सम्प्रदायिकता का विचार फैलाना असामाजिक कार्य ही है, समाज विरोधी नही। परिवार मे रहने वाले किसी भी सदस्य के सिर्फ मौलिक अधिकार ही होते हैं। सामाजिक या संवधानिक अधिकार नही होते । परिवार मे रहते हुए सभी सामाजिक अथवा सवैधानिक अधिकार परिवार के सामूहिक होते है व्यक्तिगत नही। चुंकि पश्चिम के देशो मे परिवार व्यवस्था संवैधानिक मान्यता प्राप्त नही है इसलिये उधर के देशो मे प्रत्येक व्यक्ति या नागरिक को संवैधानिक या समाजिक अधिकार प्राप्त होते है । भारत मे परिवार व्यवस्था है और हमारी सोच के अनुसार व्यक्ति के परिवार मे शामिल होते ही उसके संवैधानिक या सामाजिक अधिकार भी उसमे सामुहिक हो जाते है । यदि परिवार का कोई सदस्य अपराध करता है तो उसके लाभ हानि का परिणाम पूरे परिवार का होता है। साम्प्रदायिकता के मामले मे भी यही नियम लागू होता है। यदि परिवार का कोई सदस्य साम्प्रदायिकता फैलाता है तो पूरे परिवार का कर्तब्य है कि वह उसे अनुशासित करे।

खबरं इस सप्ताह की! आठ से पंद्रह सितम्बर बारह

इस सप्ताह के प्रारंभ मे टीम अरविन्द केजरीवाल ने दिल्ली मे बिजली की मूल्य वृद्धि के खिलाफ एक बडा आंदोलन किया। आप जानते है कि मै प्रारंभ से ही कृत्रिम उर्जा की मूल्य वृद्धि का समर्थक रहा हूँ और आज भी हूँ। फिर भी अरविन्द जी ने बिजली का जा मुद्दा उठाया है मै उसका विरोधी नही। क्योकि सत्ता की प्रति स्पर्धा मे जाने के लिये ऐसे कई नाटक करने पडते है जो लोक प्रिय हो तथा वोट के मामले मे सहायक हो। मेरे विचार से यह बिजली का मूद्दा भी सत्ता संघर्ष के लिये उठाया गया एक नाटक के रूप मे था। जिसने निश्चित ही टीम अरविन्द को राजनैतिक दष्टि से दिल्ली के स्थानोय चुनाव के लाभ पहुचाया है।

इस सप्ताह एक महत्वपर्ण घटना क्रम के अंतगत राज गोपाल जी के भूमि आंदोलन और सरकार के बीच एक समझौता हुआ। राज गोपाल जी भूमि संबंधी समस्याओ के लिये पुराने समय से लडते रहे है। यद्यपि मेरे और उनके विचारो मे एक स्पष्ट अंतर रहा हैं। निम्न वर्ग के मन मे जमीन के प्रति मोह पैदा करना और उच्च मध्यम वर्ग के मन म पैसे के प्रति मोह पैदा करना यह स्पष्ट रूप से हानिकारक होगा। उच्च मध्यम वर्ग के द्वारा लगातार यह विचार फैलाया जा रहा है कि निम्न वर्ग के पास यदि पैसा होगा तो वह उसे ठीक से नही रख सकेगा। यदि उसके पास पैसा होगा तो वह काम नही करेगा। और उससे उत्पादन भी प्रभावित होगा। यही सिद्धांत है जिसके अनुसार निम्न वर्ग को जमोन के साथ जोडा जाता है, सस्ते अनाज या अन्य सुविधाओ के साथ जोडा जाता है और उसे पैसे से दूर रखा जाता है । राज गोपाल जी की भी साच इसी प्रकार की रही हैं जिसके पक्ष मे मै कभी नही रहा । मेरा ऐसा मानना है कि श्रम की मांग और श्रम का मूल्य बढना चाहिये । कमजोर वर्ग को नगद सब्सीडी दी जानी चाहिये। उसके उत्पादन और उपभोग की वस्तुओ मे से सब प्रकार के टैक्स हटाने चाहियें, काम करने को उसकी मजबूरी को उसकी स्वतंत्रता के साथ जोडा जाना चाहिये। राज गोपाल जी, ब्रहमदेव शर्मा आदि को सोच है कि इस पिछड वर्ग का कम से कम इतनी जमीन अवश्य दिलाई जाए कि वे खेती करके जी सके। मेरा मानना है कि बुद्धिजीवो वर्ग इसलिये उनको जमीन के साथ जोडकर रखना चाहता है कि वह वर्ग यदि मजबूर नही होगा तो श्रम उत्पादन से दूर हो जाएगा और यदि श्रम नहो करेगा, उत्पादन नही करेगा तो उच्च मध्यम वर्ग के समक्ष कठिनाई खडी हो जाएगी। फिर भी राज गोपाल जी ने आंदोलन के द्वारा इन पिछड लोगो को जो राहत दिलवाई है उसके लिये वे बधाई के पात्र है। इस आंदोलन मे यदि एन. जी. ओ. के माध्यम से विदेशी धन भी खर्च हुआ है और उनका उद्देश्य कमजोर वर्ग की भलाई है तो समाज को कोई आपत्ति नही होनी चाहिये। लेकिन यदि उनका उद्देश्य वर्ग विद्वेष को बढाना है तो ऐसी विदेशी सोच चिन्ता का विषय है। मुख्य प्रश्न आंदोलन की नीयत का है। यदि वह नीयत उच्च मध्यम वर्ग के हित मे निम्न वर्ग को भुलावे मे रखना है तो इस संबंध मे और विचार करने की जरूरत है।

इस सप्ताह सोनिया जी के दामाद राबड वाड्रा के विषय मे किया गया रहस्य उदघाटन भी बहुत चर्चित रहा। इस रहस्य उदघाटन मे राहुल गांधी को प्रधान मंत्री की दौड से बाहर कर दिया तथा सोनिया गांधी के भी राजनैतिक पर कतर दिये। जो कुछ भी सामने आया वह सभी राजनैतिक दलो से जुडे लोगो के लिये एक आइने के समान है। सच बात तो यह है कि राजनीति एक व्यवसाय है और राजनीति से जुडने वाला प्रत्येक व्यक्ति दौड मे आगे निकलने के लिये ऐसे अनैतिक कार्य करता है । राबड वाड्रा ने भी जो कुछ किया वह कोई अपराध नही था। किन्तु अनैतिक तो था ही । वाड्रा ने कानून को तोड मरोड कर लाभ उठाने का अनैतिक प्रयास किया है। जिसमे प्रियंका गांधी के पति होने को भूमिका भी अवश्य ही शामिल है। यदि कोई गैर कानुनी कार्य न भी हुआ होता तो वह सत्ता का दुरूपयोग तो है ही साथ ही अनैतिक भी। कांग्रेस के लोगो ने इस मामले मे अनावश्यक कूद कर गलती की है। इन्हे तो यह कहना चाहिये था कि राबड वाड्रा न कांग्रेस के सदस्य है न उनका कांग्रेस से कोई लेना देना है। वे एक स्वतंत्र व्यक्तित्व है और उसका उत्तर वही देंगे। कांग्रेस के लोगो न इस मामले मे अनावश्यक कूदकर अपना बहुत नुकसान कराया है। राबड वाड्रा के मामले से प्रशान्त भूषण क मामले को तुलना करना किसी भी दृष्टि से कांग्रेस पार्टी को फायदा नही पहुचा सकेंगा। अच्छा हो कि अब सोनिया जी राहुल या प्रियंका को प्रधान मंत्री की दौड मे शामिल करने का स्वार्थ छोड दे अन्यथा वे असफल हो जाएगी और कांग्रेस पार्टी को लम्बा नुकसान कर जायेगी। अब भारत की राजनीति मनमोहन सिंह के नेतृत्व म ठीक दिशा मे जा रही है। अब सोनिया जी अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये उसके साथ छेड छाड न करे तो अच्छा होगा।

इस सप्ताह हरियाणा मे बढते बलात्कार के मुद्दे पर लम्बी बहस छिडी। हरियाणा सहित सम्पूर्ण भारत मे बलात्कार की घटनाए बढ रही है। और भविष्य मे भी ऐसी घटनाओं का बढना निश्चित है। हरियाणा मे पूर्व मुख्य मंत्री चौटाला ने बलात्कार को बढती घटनाओ के कारण पर लोक से हटकर कुछ विचार व्यक्त किये । उन्होने कहा कि विवाह की उम्र बढाते जाना बलात्कार की परिस्थितिया पैदा करती है। यदि खाप पंचायत का विवाह की उम्र घटाने की पस्ताव मान लिया जाए तो बलात्कार को घटनाओ मे आशिक कमी हो सकती है। हरियाणा के ही कांग्रेस नेता धर्मवीर गोयन ने लीक से हटकर यह बात कह दी को अनेक लडकियां लडको के साथ स्वेच्छा से चली जाती है और बाद मे उनके साथ धोखा हो जाता है। इतना कहना मात्र था कि कुछ महिलाएं दोनो पर इस तरह चढ बैठी जैसे कि इन दोना ने कोई बलात्कार का ही समर्थन कर दिया हो। आज स्थिति यह हो गई है कि एक दो प्रतिशत महिलाए गिरोह बनाकर 98 प्रतिशत महिलाओ का जबरदस्ती प्रतिनिधित्व करने लगी है। एक तरफ तो दो एक प्रतिशत महिलाओ को समाज की सहानुभूति भी चाहिये तो दूसरी तरफ पूरूषो से भी अधिक आगे आकर पुरूषो की आवाजो को दबाने का भी अधिकार चाहिये। 98 प्रतिशत महिलाए परम्परागत परिवार व्यवस्था मे चल रही है। ये एक दो प्रतिशत महिलाए जिन्हे अब ऐसी परम्परागत परिवार व्यवस्था पर विश्वास नही है, ये 98 प्रतिशत महिलाओ की ठेकेदार बन गई है। परिवार व्यवस्था को तोडने के सारे उपक्रम करती रहती है। यदि वास्तव मे गहराई से छान बीन की जाए तो इन दो प्रतिशत महिलाओ का व्यक्तिगत औसत आचरण परिवार व्यवस्था के प्रति औसत विश्वास अथवा समाज व्यवस्था के प्रति औसत विश्वास भी 98 प्रतिशत महिलाओ के औसत के अपेक्षा कुछ ज्यादा ही कमजोर होगा। परन्तु ये दो प्रतिशत महिलाए संगठित होने के कारण इस तरह हावी होना शुरू कर देती है जैसे कि वे 98 प्रतिशत का प्रतिनीधित्व कर रही है।

बलात्कार वृद्धि एक बहुत बडी समस्या है और इस समस्या का कारण भी खोजना कठिन नही है। किसी व्यक्ति को भूख आठ बजे लगती है और नास्ता सात बजे दे दिया जाए तो उसके चोरी छिपे होटल जाने का अनैतिक कहा जा सकता है। नई परिस्थितियों मे उसे भूख सात बजे लगे और नास्ता दस बजे मिले तो होटल जाने को मजबूरी को भी समझना पडेगा। यदि उस व्यक्तित्व के सामने बढिया बढिया भोजन तैयार करके रख दिया जाए और कह दिया जाए कि इसे तुम दस बजे ही छू सकते हा तो उसके नियंत्रण का बांध टूटना ओर खतरनाक रूप

ग्रहण करेगा। प्राचोन समय मे इच्छाए 16 वर्ष को उम्र मे पैदा होती थी और विवाह 15 वर्ष मे हो जाता था। अब इच्छाओ का पैदा हाना 16 से घटकर 14 हो गया। आर विवाह को उम्र 18 से 21 कर दी। प्राचोन समय मे मजबरी मे वैश्यालय भी खुले थे अब उन्हे भी रोक दिया गया। प्राचोन समय मे स्त्री और पुरूष के बीच भी अधिकतम संभव दूरी बनाकर रखी जाती थी, अब वह दूरी भी कम कर दी गई । आग और बारूद की दूरी घटाकर विष्फोट के बढते खतरे का हल्ला मचाना समस्याओ का समाधान नही है । दो प्रतिशत तथाकथित महिलाएं चिल्ला चिल्लाकर ब्लैक मेल करना चाहती है, जो चौटाला को डरा सकती है, कांग्रेसी नेता का मह बंद कर सकती है, किन्तु बलात्कार बढने के कारणो का समाधान नही कर सकती है। बढते हुए बलात्कार वर्तमान समय मे स्त्रो पुरूष क बीच के संबंधो पर एक सार्थक बहस शुरू करने की आवश्यकता प्रतिपादित करते है। इन दो प्रतिशत महिलाओं द्वारा चिल्ला चिल्ला कर ऐसी बहस मे बाधा उत्पन्न करना किसी भी दष्टि से उचित नही है। मै तो यहा तक समझता हूँ कि विवाह को उम्र तय करना समाज का काम हैं सरकार का नही । सरकार तो अनावश्यक दाल भात मे मुसलचंद के समान बीच मे कुद पडती है।

इस सप्ताह टो वी चैनल आज तक ने सलमान खुर्साद और उनकी पत्नी लुई खुसोद द्वारा संचालित एन. जी. ओ. के घपले का पर्दाफाश किया । अभी एक सप्ताह पहले ही कान्न मंत्री सलमान खुर्साद ने बाड्रा के तथा कथित घपले कर औरो से आगे बढकर सर्मथन किया था और कहा था कि मै तो सोनिया जी के लिये अपनी जान भो दे सकता हूँ । अब भेद खुला कि इस प्रकार की जान देने के पीछे उनका क्या उद्देश्य छिपा था। वैसे तो आम तौर पर ऐसे कानूनी दाव पेंच इन्ही उद्देश्यो से किये जाते है। बहुत कम एन. जी. ओ. समाज सेवा के लिये बने हुए है। अन्यथा अधिकांश का उद्देश्य तो व्यावसायिक ही है। सलमान खुर्शीद अपने उद्देश्यो की पूर्ति के लिये ऐसी सीमा को तोडकर आगे चले गये जब उन्होने अपनी राजनैतिक शक्ति का उपयोग करते हुए फर्जी बिल या फर्जा दस्तावेज तक पेश कर दिये तथा तर्क की सीमाएं टूट जाने दी। अच्छा हो कि अब सलमान खुर्शीद अपना पद छोडकर कांग्रेस पार्टी को इस शर्म से बच जाने दे।

प्रश्न 4 कुमार प्रशान्त का लेख और बजरंग मुनि का उत्तर ''ढहती मर्यादाओ के बीच''

लेख–जनसत्ता 13 अक्ट्बर 2012। अन्ना आंदोलन के टूटने की घोषणा स्वयं अन्ना ने कर दी। एक प्रयास टूटा, एक आशा टूटी। अन्ना आगे क्या और कैसे करेंगे, यह तो पता नही, लेकिन टीम ने जरूर नया अवतार लिया है और एक नया राजनीतिक दल बनने की प्रक्रिया मे है। इस पार्टी की जड मे क्या क्या होगा इसका पता समय के साथ साथ चलेगा। लेकिन यह अजूबा हम पहली बार ही देख रहे ह कि एक पार्टी चुनाव की तैयारी, राजधानी दिल्ली मे सडकों पर आंदोलन चलाकर कर रही है। अरविन्द केजरीवाल और उनके साथियो को इस बात के लिये बधाई तो देनी ही चाहिये कि जडता के इस दौर मे उन्होने नई जमीन तोडी है।

जिस राजनीतिक दल की नसो मे आंदोलन रक्त बन कर दौडेगा उसकी तासीर कुछ अलग होगी, ऐसा हम मान सकते है। लेकिन इतना ही नही हो रहा हैं यह भी हो रहा है कि महाराष्ट्र मे सिचाई के नाम पर कैसी लूट मची हुई है इसका सप्रमाण खुलासा हमारे सामने आ रहा है। कभी कुछ करोड रूपये का चारा खाने की बात से हम स्तंभित थे, अब सत्तर हजार करोड रूपये की कितनी ही परियोजनाएं भाईलोग डकार गये है। ठीक भी है । पिछडा अशिक्षित विहार जो करे, प्रगतिशील शिक्षित महाराष्ट को उससे अधिक और आगे का ही काम करना चाहिये। और जैसे जैसे इस घोटाले के नये नये पन्ने खुल रहे है वैसे वैसे यह बात भी उभरती जा रही है कि इसमे सभी शरीक है। पक्ष से लेकर विपक्ष तक । जानकार बता रहे है कि यह तो कहानी का पहला पन्ना भर है । पूरी कहानी तो लूट की लंबी कथा है। देश इस झटके से उबर नही पाया था कि गांधी परिवार के दामाद राबर्ट वाड्रा के व्यापार का खुलासा हुआ । जब तक आप इस लेंख को पढेंग, इस ओर ऐसे दूसरे खुलासो के कितने ही पन्ने हवा मे होंगे । जो सामर्थ की छोटी सी जगह पर भी है वह वही से देश को खोखला बनाने मे जुटा है। विकास का जितना बडा दावा लूट की उतनी बडी चौकडीं ।

सारे बडे नाम, उज्जवल छवियां, उचे ओहदे और बेपनाह अधिकार, इस बाढ मे सभी कागज की नाव की तरह डूबते उतराते दिखाई दे रहे है। लोकतंत्र मे सबसे बडा अपशकुन होता है आस्थाओं का टूटना। यह वही दौर है। और ऐसे मे ये ही लोग देश को संविधान, कानून, संसद की सर्वोच्चता, राष्टीय प्रतीको चिन्हो का आदर, विभिन्न अदालती फैसलो की याद दिला रहे ह। पार्टियो के बीच की विभाजन रेखा मिट सी गई है और सभी एक सुर मे एक ही बात बोल रहे है कि अभिव्यक्ति की आजादी का हम भी समर्थन करते है लेकिन उसकी कोई तमाम मर्यादा होगी? कोई यह नही कह रहा है कि जिन पर आरोप या अभियोग या अपराध का दाग लगा हुआ है वे मर्यादा कैसे तय कर सकते है? फिर यह भी तो तय करना होगा कि मर्यादा किसकी होगी किस पर होगी और कब होगी? और यह भी कौन तय करेगा कि किसने कब कहां और कौन सी मर्यादा तोडी हैं? और फिर सवाल यह भी उठेगा कि मर्यादा तोडने की सजा क्या होगी ओर सजा का निर्धारण कौन करेगा? एक सीधा सा सच समझ सके और स्वीकार कर सके तो रास्ता बन सकता है । जिसक पास सामर्थ्य है, शक्ति है, हैसियत है, रसूख है, मर्यादाओ के पालन की सबसे पहली और सबसे बडी जिम्मेवारी उसकी होती है। जब वहां से मर्यादाए तोडी जाती तो समाज को अपनी नइ मर्यादाओ की खोज के लिये दूसरी निष्प्राण हो गइ मर्यादाए तोडनी ही पडती है। आधी सदी से कुछ ज्यादा हुआ कि हमने संसदीय लोकतंत्र का प्रयोग अपने यहा किया और तब से आज तक हम सार्वजनिक व्यवहार की तमाम मर्यादाए तोडते आये है। यहां तक कहने मे कोइ अत्युक्ति नही होगी कि रसूखदार लोगा ने इस लोक तंत्र को ऐसे बरता है जेसे कि उनके लिये कोई मर्यादा है ही नही। इस मर्यादाविहीन व्यवहार ने हमारे लोकतंत्र को ऐसे तार तार कर दिया है कि आज किसी युवा हिन्दुस्तानी के साथ लोकतंत्र की बात करते समय जी घबराता है। उसके मन मे लोकतंत्र की कोई प्रतिमा है ही नही। जो है वह लोक तंत्र का आज का यह विद्रूप है जिसके प्रति न तो किसी के मन मे आप कोई आस्था भर सकते है और न आशा जगा सकते है । इस लोकतंत्र के संदर्भ मे मर्यादा वह तीर भर है जिससे सत्ता संपत्ति विहीन नागरिको का शिकार किया जाता है । अगर ऐसा नही है तो कोई हम समझाए कि विनायक सेन पर राष्ट्रद्रोह का आरोप लगाया जाता है और उन्हे तुरंत गिरफ्तार भी कर लिया जाता है , और फिर लम्बे कारावास और झूठे मुकदमो के बाद अदालत उन्हे रिहा भी कर देती है, लेकिन न संसद न न्यायपालिका और न प्रशासन का कोई आदमी अपनी गरदन आगे करता है कि यहां एक आदमी की मर्यादा का हनन हुआ है और हम इसकी जिम्मेवारी लेते है।

भूमि अधिग्रहण के संदर्भ मे यह मर्यादा वर्षो पहले तय की गई, अदालत के द्वारा तय की गई कि जमीन के बदले जमीन दी जानी चाहिये। इस मर्यादा को तय करने की पीछे यह बात निहित है कि जहां ऐसा मामला हो कि जमीन के बदले जमीन नही दी जा सकती हो और लोग दूसरे किसी आधार पर अपनी जमीन देने को तैयार न हो वहा कोई भी सत्ता उनकी जमीन नही ले सकती । न छीन कर न खरीद कर न भाडे के गुंडो की ताकत से और न व्यापारी कंपनियों के धन बल से। लेकिन यहा मर्यादा तो आपने तोडी है। उसकी सजा क्या है, अपना पद छोडो और मर्यादा को तोडने के इस शर्मनाक खेल मे जो भी शामिल हो उन सबको उसी तरह जेल भेजा जाए जिस तरह विनायन सेन को भेजा जाता था। क्या आज तक ऐसे मामले मे सारे देश मे किसी को भी जेल हुई है ? रसूख वालो का सबसे प्रिय खेल है मर्यादाए तोडना बल्कि कोई कितना रसूखवाला है यह इससे भी साबित होता है कि वह कितनी मर्यादाए तोड कर जीता है। कुडन कुलम अणुउर्जा संयंत्र की मुखालफत करते हजारो लोग अगर देश द्रोही है तो क्या सत्तावालो को यह नही सोचना चाहिये कि वे अपना देश ही बदल ले और जहा देश भक्त लोग रहते हो वहा चले जाए? दोनो को एक दूसरें से छुटकारा मिल जाए। कभी नाटककार ब्रेस्त ने अपने देश की सरकार को ऐसा ही सुझाव दिया था। इसी तमिलनाडु मे जयललिता थी जो कभी द्रमुक सरकार को गिराने की लिये लोगो से सारी मर्यादाए तोडने का आहवान करती थी और इन्ही देश द्रोहियो ने उनके लिये एक एक वोट जुटा कर सत्ता मे उनकी वापसी सुनिश्चित की थी। आज उन्ही को सिर्फ इसलिये कुचला जा रहा है कि वे मांग कर रहे हैं कि कुडनकुलम अणु उर्जा संयंत्र तब तक चालू न किया जाए जब तक उनके सवालो के जबाब नही मिल जाते। अणुउर्जा के बारे मे चल रही सारी बहस हम एक किनारे कर देते है और सिर्फ इसका विचार करते हैं कि लोकतंत्र मे क्या यह मयादा से बाहर की बात है कि तंत्र और लोक म संवाद होना चाहिये और जब तक संवाद पूर्ण न हो आगे की कोई कार्यवाही न हो। फिर कोई तेवर से पूछता है कि क्या कुछ लोगो के कारण सबके विकाश की गाडी रोक दी जाए? ऐसा पूछने वाला यह सुनने को तैयार नही है कि भाई जिसके लिये विकास की बात करते हो वही तो कह रहा है कि हम इतना सारा विकास नहो चाहिये । हम सांस लेने दो फिर विकास की बात करेंगे। आप जबरन किसी के गले मे अपने विकास का अमृत डालोगे तो वह भी विनाश का हलाहल बन जाएगा। इसलिये कुडनकुलम भी रूके, सिचाई और विद्यत की सारो परियोजनाए भी रूके। रूके हिमाचल की नीव झकझोरते सारे दानवी यंत्र और गंगा का रूख मोडती सुरंगे। रूके, इसलिये नही कि हमारा इनसे कोई वैर है । रूके इसलिये कि इनके परिष्कार की जरूरत है । संविधान, संसद, अदालन, कानून, पक्ष, विपक्ष आदि सभी जब अपना संदर्भ खोने लगे तो हिम्मत के साथ नई दिशा मे अभियान की जरूरत है। महात्मा गांधी गोली खाने से पहले अपने मन प्राणो का सारा बल लगा कर इसी अभियान की तैयारी कर रहे थे। इतिहास उस अधूरे काम की पूर्ति चाहता है और हमसे चाहता है । तो क्या दलीय लोकतंत्र अपनी उम्र पूरी कर रहा है? सवाल तीखा है और कई लोग होगे जो बडे तीखेपन से इसका प्रतिवाद करेंगे। लेकिन प्रतिवाद जबाव नही होता है जबाब तो खोजना पडता है उसे आत्मविश्वास के साथ देश समाज के समाने रखना पडता है । और फिर उसे जन मन म उतारना पडता है । तो क्या हम उस जगह पर लौट रहे ह जहा से 1947 मे हमने यात्रा शूरू की थी। तब हमने ब्रिटेन से संसदीय लोकतंत्र का ढाचा उठाया था और इस देश के सिर पर लाद दिया था । यह लादा हुआ बोझ ढोने को देश अब तैयार नही है। इसलिये अपनी धरती और अपने मेधा से लोकतंत्र की एक नई परिकल्पना खडी करे हम और उसे इस देश की धरती मे रोपने की साधना म जुटे । तभी यह धुंध छटेगी और हम खुल कर सांस ले सकेंगे।

उत्तर– आपने मर्यादाओं के टूटने की चर्चा की हैं। राजनेताओं ने हर जगह मर्यादाएँ तोड़ी हैं यह बात सच हैं। किन्तु साथ ही यह भी सच हैं कि मर्यादाएँ तोड़ने की ' शुरुआत सन् पच्चास में पण्डित नेहरु ने ही की थी जब उन्होने संविधान संशोधन करके न्यायपालिका के पंख कतरते हुए अनुसूची नौ का प्रावधान कर दिया था। उस समय तो पण्डित नेहरु और अम्बेडकर मिलकर सारी प्रशासनिक मर्यादाओं पर बुलडोजर चलवाने में सक्रिय थे तो उसके बुरे परिणाम तो आज दिखने ही थे। राजीवगाँधी न ऑकर दल बदल विधेयक द्वारा रही सही मर्यादाएँ भी तोड़ दीं। दल – बदल विधेयक का ही दुष्परिणाम है कि राष्ट्रीय दल व्यक्तियों की बपोती बनने को मजबूर हैं। बेचारे मधुलिमये चिल्लाते रह गये किन्तु किसी ने एक न सुनी। बहुत भाग्य से यू.पी.ए. टू में मनमोहन सिंह जी न एक – एक करके नई मर्यादाएँ मजबूत करनी शुरु की हैं। न्यायपालिका स्वतंत्रता की दिशा में बढ़ रही हैं। भ्रष्टाचार के नये–नये प्रकरण सामने आ रहे हैं। सी.ए.जी. प्रधानमंत्री के खिलाफ रिर्पोट देकर भी अपने पद पर हैं। सोनिया जी के दामाद राबर्ट्ट बड़ेरा तक पर आक्रमण करने के बाद भी अरविन्द केजरीवाल तथा मीडिया का विरोध मर्यादित ही हैं। टूटती जा रही मर्यादाओं को जीवित करने के अल्पमत वाली सरकार के सफल प्रयत्न कितने कठिन होते हैं यह सिर्फ मनमोहन सिंह ही बता सकते हैं। आज आप सरीखे लोग भी जितनी हिम्मत से खुलकर मनमोहन सिंह की व्यक्तिगत या नीतिगत आलोचना कर पाते हैं उतनी अटल जी के तथा कथित दामाद तक के समय किसी की हिम्मत नहीं थीं।

मर्यादाएँ सिर्फ राजनेताओं तक ही सीमित नहीं होतीं। मर्यादाएँ व्यक्ति की भी होती हैं और समाज की भी। व्यक्ति का अपनी मर्यादाओं में रहना स्वशासन होता हैं, सामाजिक मर्यादाओं में रहना अनुशासन तथा प्रशासनिक मर्यादाओं में रहना शासन। किसी व्यक्ति द्वारा किसी अन्य की नीतियों की समीक्षा करना उसकी स्वतंत्रता हैं। किन्तु यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य की समीक्षा से आगे जाकर आलोचना करना शुरु कर दे तो उसन अपनी व्यक्तिगत मर्यादाओं का उल्लंघन करके सामाजिक सीमाओं के अनुशासन में प्रवेश कर लिया हैं। यदि कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति या समूह की आलोचना से भी आगे जाकर विरोध करना शुरु कर दे तो उस व्यक्ति ने सामाजिक सीमाएँ तोड़कर प्रशासनिक सीमाओं में प्रवेश कर लिया हैं। नक्सलवाद की प्रशंसा आपकी व्यक्तिगत सवतंत्रता हैं। नक्सलवाद का सर्मथन आपकी सामाजिक स्वंतत्रता हैं व्यक्तिगत नहीं। संभव है कि आपको समाज इसके किये अनुशासित भी करें। किन्तु नक्सलवाद का सहयोग करते ही आप प्रशासनिक सीमाओं में प्रवेश कर जाते हैं। यदि आप नक्सलवाद में सहभागी हो जावें तब तो प्रशासन और आपके बीच की सारी मर्यादाएँ ही अर्थ हीन हो जाती हैं। विनायक सेन नक्सलवादियों के सहयोग के आरोपी थे। वे सिर्फ प्रशंसा या समर्थन तक ही सीमित नहीं थें। मैं नहीं समझता कि विनायक सेन के मामले में मर्यादाओं को सीमाएँ विनायक सेन तो तोड़ी थी या सरकार ने? विनायक सेन की प्रशंसा या समर्थन करना आपका व्यक्गित या सामाजिक अधिकार हैं। किन्तु गांधोवाद का बिल्ला लगाकर विनायक सेन का समर्थन या सहयोग करना सामाजिक मर्यादाओं के विपरोत हैं, सामाजिक मर्यादाओ का उल्लघन है। यह अलग बात है कि आपने बम्बई में गांधी का चित्र मंच पर रखकर प्रोफंसर गीलानी को सम्मानित किया था। उस समय गांधीवाद को परिभाषित करने का पूरा अधिकार आपके पास था उस समय का मेरा लेख ज्ञानतत्व में छपा था जो संलग्न हैं।

मुझे याद है कि बंगाल की दिसपुर मींटिग में आप मंच संचालन कर रहे थे। कृत्रिम ऊर्जा पर चर्चा चल रही थी। फतेहपुर के प्रमुख कार्यकर्ता रामभूषण सिंह जी ने सुझाव दिया कि साइकिल पर चार सौ रुपया प्रति साइकिल लगने वाला कर ज्यादा अन्याय पूर्ण है या रसोई गैस पर दी जा रही सवसीडो का कम होना। हम साइकिल जैसी वस्तुओं पर लगने वाले टैक्स का विरोध का आधार क्यों न बनाये? तो आपने बेरहमी से डांटकर बिठा दिया और कहा कि यह बात आप दूसरों के कहने से बोल रहे हैं।

पंजाब की बैठक में आप गुजरात चुनाव में नरेन्द्र मोदी के खिलाफ चुनाव प्रचार के लिये सर्वोदय के जाने के पक्ष में बोल रहे थे। मैने कहा था कि सर्वोदय को किसी राजनैतिक दल के पक्ष विपक्ष से दूर रहना चाहिये। बंग जी के सामने ही आपने डांटकर मुझे चुप करा दिया। अनेक ऐसे उदाहरण हैं जब बंग जी के नेतृत्व और सिद्ध राज जी के मार्ग दशर्न मे लोक स्वराज्य आदोलन पर कोई योजना बनने लगी तो आपने तानाशाही पूर्वक ऐसी चर्चा को विफल कर दिया। आपने विफल किया। दो हजार दो में आपने बम्बई में बंग जी की बैठक में ही आने से यह कहकर इन्कार किया कि उसमें बंग जी के साथ मै हूँ। मर्यादाएं सिर्फ दूसरो के लिये ही नही हाती है बल्कि अपने लिये भी होती है। उस समय आप पावर पाकर उसी प्रकार मर्यादाए तोड रहे थे जिस तरह आज के राजनेता पावर पाकर तोड रहे है।

आज स्पष्ट हो गया है कि सम्पूर्ण भारत साम्यवादी प्रभाव से मुक्त हो रहा हैं। अहिंसक गांधी के विचारों को नक्सलवाद के साथ जोड़ने के प्रयास आप जैसे गांधीवादी भले ही करें किन्तु मै तो नहीं कर सकता। आप दशको से अमेरिका विरोधी के रुप में प्रख्यात रहें हैं। मैं प्रारंभ से ही अमेरिका का अन्ध विरोध घातक मानता रहा। आज के लेख में भी आपने जिस तरह कुनीकलम परियोजना के विरोध की बात घुसाई वह आप द्वारा मर्यादाओं को तोड़ने का एक प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। आपको किसी परियोजना की आलोचना करने का अधिकार है किन्तु विरोध करने का नहीं। विरोध करते ही वहाँ संवैधानिक अधिकार की बात आ जाती है जिसमें सरकार और न्यायालय प्रमुख हैं। परियोजना अन्तिम चरण में हैं। यदि इस स्थिति में भी कोई आलोचना की मर्यादा से बढ़कर विरोध तक जाता है तो सरकार का कर्तव्य है कि ऐसे पेशेवर विरोधियों को कठोरता से दबा दें। यह सरकार की कमजोरी है कि उसने वहाँ विरोध प्रदर्शन होने दिया। मर्यादा का उल्लघंन सिर्फ सरकार के लिये ही प्रश्न वाचक नहीं है। मर्यादा का उल्लंघन तो व्यक्तियों के लिये भी घातक है और संगठन के लिये भी। मर्यादाएँ बनाने और तोड़ने की लाभ हानि के परिणाम अच्छे नहीं हैं। परियोजना की आलोचना की सीमाएँ तोड़कर विरोध करना निश्चित रुप से मर्यादा तोड़ने का कार्य था। मर्यादाओं के संबंध में आपसे प्रत्यक्ष संवाद भी संभव है। आलोचना और विरोध या समर्थन और सहयोग का फर्क भी समझने का जरुरत है।

आज ये बातें मैं इसलिए लिख रहा हूँ कि आप, ब्रम्हदेव शर्मा, अमर नाथ भाई, पोवी, रामगोपाल आदि चर्चा के योग्य हैं। यदि यह लेख स्वामी अग्निवेष का रहा होता तो मैं उसे न पढ़ता न समीक्षा करता क्योंकि आप सबकी नीतियों से मतभेद हैं, नीयत से नहीं। अन्य अनेक लोग ऐसे हैं जिनकी नोयत ही विश्वसनीय नहीं। मेरा विचार है कि संघ परिवार का विरोध करना हमारी सर्वोच्य प्राथमिकता नहीं होनी चाहिए। हम आवश्यकता अनुसार संघ परिवार की समीक्षा या आलोचना तक सीमित कर लें। इसी तरह अमेरिका आदि देशों का भी अन्ध विरोध करने की अपेक्षा उनके साथ प्रतिस्पर्धा तक सीमित रहना ठीक रहेगा। गरीब ग्रामीण श्रमजीवी छोटे किसान आर्थिक मामले में उच्चमध्यम वर्ग, बुद्धिजीवी, शहरवासी, बड़े किसानों के ' शोषण के शिकार हैं। किसान अपने खेत के गन्ने का गुड़ न बना सकें और हम भारत की आणविक ऊर्जा नीति के खिलाफ आंदोलन करें यह ठीक नहीं। हम लोकतंत्र को लोकस्वराज्य की दिशा में कुछ न सोचकर स्वदेशी खेती, स्वदेशी प्रयोग की पहल करे यह ठीक नहीं इसी उद्वेश्य से मैने आपको यह खुला पत्र लिखा हैं।

क्रमांक 4 का संलग्न

सर्वोदय की दो पहचान है (1) विचार ,(2)संगठन।गांधी जी के विचारों के आधार पर जो समाज मे जन जागृति पैदा करने का प्रयत्न करें वे सर्वोदयी होते है।ऐसे सब लोग विचारों के आधार पर गांधी को समाज में स्थापित करने का निरन्तर प्रयत्न करते है। दूसरे वे लोग होते हैं जो गांधी संस्थाओं सम्पत्ति नाम आदि की व्यवस्था करते ह। ये लोग संगठन के रूप में होते है ऐसे लोगो के विधिवत् बने संगठन का नाम सर्वसेवा संघ है।सर्वोदय से आचरण मुंख्य होती है।भारत में लाखों सर्वोदयी ह जो गांव गावं तक फैले हुए हैं और जिन्हे बाहर के लोग बहुत कम जानते ह किन्तु संगठन के लोग निश्चित ह जिन्हे आम तौर पर प्रचार मिला हुआ है।

मरा अनुभव यह है कि सर्वोदय के लोगों पर वामपंथ का नगण्य प्रभाव है।वह समाज में सत्य अहिंसा,आदर्श समाज रचना खादी आदि रचनात्मक कार्यो में स्वाभाविक रूप से लगा रहता है और यदि सर्व सेवा संघ कोई विशेष आवाहन करे तो उसमें भी लग जाता है।संगठन की स्थिति बिल्कुल विपरीत होती है। उसे अपने सांगठनिक अस्तित्व की चिन्ता करनी पड़ती है और दिखाने के लिये कभी कभी भले ही समाज रचना का भी काम करना पड़े अन्यथा अधिकांश समय जोड़ तोड़ में ही लग जाता है। मैने सर्वोदय संगठन के वामपंथी प्रभावित होने की बात लिखी ह।उसका सर्वोदय संगठन मात्र से ही संबंध है सर्वोदय कार्यकर्ता से नहीं क्योंकि सर्वोदय कार्यकर्ता के आचरण में ऐसी किसी बीमारी का प्रवेश नही के बराबर है।

हम यह विचार करें कि भारत में कौन कौन से व्यवहार है जो वामपंथ की पहचान माने जाते हैः–

(1) अमेरिका विरोध।
(2) इस्लाम समर्थन–इसमें मुख्य रूप से हिन्दुओ को एक पक्ष माना जाता है।और हिन्दू के विरूद्ध अन्य का समर्थन किया जाता है।
(3) वर्ग निर्माण वर्ग विद्वेष और वर्ग संघर्ष।
(4) हिंसा अहिंसा की बहस से दूरी।
(5) अधिकार कन्द्रित शासन प्रणाली।

मुझे ऐसा लगता है कि आज सर्वोदय अमेंरिका विरोध में आगे आगे रहता है मै सर्वोदय संगठन की जितनी भी बैठकों या सम्मेलनों में गया उसमें घुमा फिराकर इराक और अमेरिका के टकराव की चिन्ता सबसे अधिक दिखती रही। वक्ताओं के भाषाणों में भारतीय आतंकवाद का विरोध भरा रहता था। अभी नवंबर माह में बम्बई में '' आतंकवाद की जड़ कहॉ है''विषय पर एक राष्ट्रीय सेमिनार सर्वसेवा संघ वैनर तले हुई।इसमें सात आठ वक्ताओं ने भाग लिया जिसमे बौद्ध धर्म गूरू दलाई लामा, कैथोलिक धर्मगुरू डाल्फी डिसूजा प्रसिद्ध समाज सुधारक असगर अली इंजीनियर

संसद पर आक्रमण से दोष मुक्त प्रोफेसर गीलानी, अधिवक्ता युसुफ मुछाला,न्यायमूर्ति श्री कृष्ण अय्यर, संघ परिवार के किशोर जावले ऐसे लोग थे जो सर्वोदय परिवार के नही थे।सूची देखकर आप अंदाज लगा सकते है कि कितने तटस्थ सूची बनी।इस सेमिनार में आयोजको की ओर से जो प्रस्तावना भाषण दिया गया उसका पूरा का पूरा तथ्य अमेरिका को आतंकवादी प्रमाणित करना था।मुख्य भाषण की शुरूवात '' हम दो फांसियो(सद्दाम और अफजल गुरू) के बीच के अन्तराल में आतंकवाद पर विचार करने के लिये बैठें हैं से हुई।अब आप स्वयं सोचिये कि किस तरह आतंकवाद जैसे मुद्दे को सद्दाम और सफजल की फांसी के बीच केन्द्रित कर दिया गया।इसके बाद भाषण में लम्बा अफगानिस्तान ओसामा और इराक का संदर्भ दिया जाता है और अंत तक पूरा भाषण अमेरिका विरोध करते करते समाप्त हो गया। लगा कि हम किसी अन्तराष्ट्रीय सेमिनार में बैठे हों और प्रस्तावक संस्था भी राष्ट्रीय से कही अधिक अन्तराष्ट्रीय आतंकवाद के प्रति गंभीर हो।अफजल गुरू के अपराध को भी वामपंथी चेहरे से ही देखा गया और बाकी सारी कमी पूरी करने के लिये तो प्रोफेसर गिलानी और युसुफ मछाला जी बैठाय हूए थे ही।मुझे तो आश्चर्य हुआ कि सम्पूर्ण कार्यक्रम में नक्सल वाद कश्मीरी आतंकवाद या आसाम में आतंकवाद पर कोई भी चर्चा नही हुई।इसी तरह स्वदेशी आंदोलन की भी जो दशा है वह पूरी तरह एक पक्षीय है जिसमें स्वदेशी कि अपेक्षा विदेशी विरोध को अधिक महत्व प्राप्त है।मैं नही समझता कि गांधी जी के स्वदेशी का यह अर्थ रहा।मेंरे विचार में गुलाम भारत में स्वदेशी का अर्थ भले ही भारतीय हो पर स्वाधीन भारत में स्वदेशी का अर्थ स्थानीय ही होगा।किन्तु वामपंथ के नीति निर्धारण की पहल में हमने अपनी सारी नीतियों को अमेरिका विरोध तक केंन्द्रित कर दिया।

इसी तरह वामपंथ की दूसरी खास पहचान है इस्लाम का अन्ध समर्थन। वामपंथी संघ परिवार को हिन्दूओ का प्रतिनिधि मानकर संघ परिवार कि गल्तियों के लिये आम हिन्दूओ के विचारों कि आलोचना करता है किन्तु मुसलमानों के मामले में उसकी भाषा तत्काल बदल दी जाती है वह मुस्लिम कट्टरवादियों के साथ मुसलमानों को कभी नही जोड़ता।प्रोफेसर गिलानी इसलिये निर्दोष है क्योंकि न्यायालय ने बरी कर दिया और अफजल गुरू इसलिये माफी योग्य है कि उन्हे वकील नहीं मिला। ये लोग हिनदूओं मे महिला उत्पीड़न की खुब चर्चा करते है किन्तु मुसलमानों मे नहीं करते।ये लोग समान नागरिक संहिता तक का विरोध करते हैं।मैने सर्वोदय के अच्छे से अच्छे लोंगो को भी मुसलमानों की एकतरफा चापलुसी करते पाया है। मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि सर्वोदय वालों पर न इस्लाम को कोई प्रभाव है न ही मुसलमानों का कोई दबाव है।इनके मन में संघ के प्रति घृणा है और वामपंथी उस घृणा को इस्लाम समर्थन के रूप में हमेंशा भुनाते रहते है।

वामपंथ कि तीसरी पहचान है वर्ग संघर्ष।सम्पूर्ण समाज में भिन्न भिन्न आधारों पर वर्ग निर्माण करके उपेक्षित और शोषित वर्गो को अपने अधिकारों के प्रति इस प्रकार जागृत और संगठित करना कि वह जागृति वर्ग संघर्ष का रूप ले सके। सर्वोदय की कभी यह नीति नही रही।सर्वादय की हमेशा नीति रही है कि उच्च वर्गो में इस तरह कर्तव्य भाव जागृत किया जाये कि शोषण समाप्त हो और वर्ग संघर्ष कमजोर हों।जो न माने उन्हे कानुन से भले ही मना दिया जाय। किन्तु किसी भी स्थिति में समाज में संघर्ष न हो।किन्तु वामपंथीयों के प्रभाव में सर्वोदय निरंतर वर्ग संघर्ष को प्रोत्साहित करने की नीति पर चल रहा है।

चौथो बात यह है कि समाज में हिंसा अहिंसा के बीच यदि कोई बहस छिड़ी तो अहिंसा का पक्ष न्याय संगत प्रमाणित होना स्वभाविक माना जाता है।साम्यवाद ऐसी बहस को निरूत्साहित करता है वह इराक और अफगानिस्तान की हिंसा का चाहे जो प्रतिरोध करें किन्तु नक्सलवादी हिसा का विरोध नही करता। समाज में भी कानुनी और अहिंसक प्रतिरोध के स्थान पर हिंसक टकराव को वह प्रश्रय देता है।सर्वोदय पूरी तरह अहिंसा का पक्षधर है किन्तु वह हिंसा अहिंसा के बीच स्पष्ट विभाजन में रूचि नहीं रखता।मैने तो सर्व सेवा संघ के उच्च पदाधिकारियों को भी खुलेआम हिंसा समर्थक आयोजनों में बढ़ चढ़ कर भाग लेते देखा है।

पांचवी बात यह है कि साम्यवाद केन्द्रित शासन व्यवस्था का पक्षधर है और सर्वोदय विकेन्द्रित शासन व्यवस्था का पक्षधर।किन्तु जय प्रकाश आंदोलन के बाद सर्वोदय के सभी प्रयत्न केन्द्रित शासन व्यवस्था के पक्षधर रहें।केन्द्रित शासन व्यवस्था में दूसरा पक्ष शासन की गलत नीतियों का विरोध करके उसे सुधारने हेतु मजबूर करता है जबकि विकेन्द्रित शासन व्यवस्था में विपक्ष शासन के आदेशो का विरोध न करके अधिकारों को चुनौति देता है। सर्वोदय ने अभी एक नमक आंदोलन पर विचार किया किन्तु वह भी शासन के गलत आदेश को सुधारने कि मॉग थी न कि अधिकारों को चुनौती।जब भी सर्वसेवा संघ में अधिकारों के विकेन्द्रीयकरण की बात आती है तो वामपंथी वर्ग किसी न किसी बहाने उसे पीछे करने में सफल हो जाता है।

मैं पूरी तरह आश्वस्त हूँ कि धर्म निरपेक्षता वर्ग समन्वय अहिंसा अधिकारो का विकंन्द्रीयकरण सर्वोदय के समान्य कार्यकर्ता की स्वभाविक सोच है और इन विषयो पर इतनी स्पष्ट सोच किसी अन्य ग्रुप की नही है।यह पूरी तरह प्रमाणित है कि किसी भी परिवर्तन के चारो मुल आधार हो सकते है अर्थात भारत में समाजिक परिवर्तन का नेतृत्व सर्वोदय ही कर सकता है और दूसरा स्वाभाविक रूप से नही कर सकता। सर्वोदय का हर कार्यकर्ता इन मामलों में स्पष्ट सोच रखता भी है किन्तु सर्वोदय नेतृत्व वामपंथयों के वाकजाल में फसकर उसे पुँजीवाद विरोध, संघ विरोध, शोषण विरोध, सत्ता की गलत नीतियोंका विरोध अधिकारों के लिये हिंसा आदि दिशा में मोड़ रहा है। मेरी इच्छा है कि सर्वोदय कार्यकता अपने नेतृत्व को इस बात के लिये तैयार करें कि किसी अंहिसक और सवैधानिक आंदोलन की दिशा बन सके।

यह एक शुभ संकेत है सर्वोदय का अधिकांश कार्यकर्ता प्रतिनिधि वापसी तथा स्थानीय इकाइयों को अधिकारों की संविधान में सूची होने को ही असली गांधीवाद तो पहले से ही मानता है किन्तु अब इसके लिये संगठित आंदोलन की दिशा में भी सक्रिय हो रहा है। संघर्ष को इधर उधर बहकाने वालो को संख्या लगातार घट रही है। भविष्य में इस दिशा में और भी अधिक ध्रुवीकरण की पूरी पूरी संभावना है।हमारा पूरा प्रयत्न होगा कि ऐसे लोंगो से मिलकर हम निरंतर उसके हृदय परिवर्तन का प्रयास जारी रखेंगे।

प्रश्न 5 राजीव माहेश्वरी, संगठन सचिव ''ज्ञान क्रान्ति परिवार''

(1) राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री के चुनाव पर अंक 254 में श्री छबील सिंह जी ने जो विचार व्यक्त किया है मैं उससे सहमत हूँ। आप से यह जानना चाहूँगा कि अमेरिका की तरह भारत में हम अपने दो सर्वोच्य पदों के लिए सोधे चुनाव क्यूं नहीं कर सकते? अगर कर सकते हैं तो इन पदो के लिए चुनाव प्रणाली क्या होनी चाहिए?

उत्तरः— मैं भी उनसे सहमत हूँ। किन्तु विचारणीय प्रश्न यह है कि इस सीधे चुनाव से भारत में लोक स्वराज्य आयगा क्या? वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था में सुधार का यह कदम हो सकता है किन्तु इससे व्यवस्था परिर्वतन नहीं होगा। जब तक संसद के अधिकार दायित्व तथा हस्तक्षेप में

कटौती न हो, जब ऐसा दिखने लगे कि भारत का राजनेता राष्ट्र की अपेक्षा समाज को बड़ा समझने लगा है तो मानिये कि व्यवस्था परिर्वतन होने लगा हैं। तब तक चर्चा तो जारी रह किन्तु ऐसे किसी मुद्द पर आंदोलन संभव नहीं।

''वर्तमान संसदीय लोक तंत्र में तो संसद एक जेल खाना है। जहां हमारा भगवान रूपी संविधान कैद है। भगवान को जेलखाने से मुक्त कराना हमारी सर्वाच्च प्राथमिकता है। संसदीय लोकतंत्र को सहभागी लोकतंत्र में बदलना ही होगा । लोक संसद के लिये आंदोलन इसका प्रारंभिक चरण है। लोक स्वराज्य मंच ने इसकी पहल की है। लोक स्वराज्य मंच से जुडिये और अपने भगवान को जेलखाने से मुक्त कराने की पहल किजिए।''